पुराणों में लौकिक कलाएँ

रेखा जैसवार

भारतीय धर्म दर्शन संस्कृति और सभ्यता के स्रोत वेदों में निहित है। भारतीय धर्म और संस्कृति के उत्सभूत वेदार्थ का उपवृंहण और प्रचार के लिए परम मेधावी विष्णु रूप धारी व्यास ने पुराणों की रचना की। छान्दोग्योपनिषद् में पुराणों की परिगणना पंचम वेद के रूप में की गई है। वास्तव में पुराण वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ हैं। पुराण अनन्त ज्ञान राशि के भण्डार हैं। इनका साहित्य अत्यन्त विशाल है। लौकिक तथा पारलौकिक ज्ञान–विज्ञान के सभी विषयों का इसमें प्रचुरता से समायोजन हुआ है। आज तक जितने ज्ञान–विज्ञान, कला तथा विद्या के क्षेत्रों का विकास हुआ है, पूर्व द्रष्टा ऋषियों ने उनका सूक्ष्म रूप पुराणों में समावेश किया है। इन पुराणों में वर्णित कलाएँ अनन्त हैं।

पुराणों में भारतीय कलाओं को प्राचीन काल से संरक्षण प्राप्त था। पुराणों में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ललित कलाओं का उल्लेख किया गया है।